शास्त्रों ने सेवा के तीन प्रकार बताये हैं।मनुष्य तीन प्रकार से समाज की सेवा कर सकता है।

💐 तनुजा सेवा अथवा तन से सेवा - तन से हम समाज की अनेक तरह से सेवा कर सकते हैं। कहीं कोई समाज सेवा का कार्य चल रहा हो तो वहाँ जुड़कर अपनी सामर्थ्य के अनुसार कोई भी कार्य कर सकते हैं।

💐 किसी प्यासे को पानी पिला देना, किसी असहाय को उसके गंतव्य तक पहुँचा देना, कभी-कभी किसी सार्वजनिक स्थल पर साफ सफाई कर देना या कम से कम समय मिलने पर वृक्षारोपण ही कर देना ये सारी सेवाएँ तन द्वारा की जानें वाली समाज सेवा ही हैं।

💐 वित्तजा सेवा अर्थात् धन से सेवा- किसी भी सामाजिक अथवा पारमार्थिक कार्य में धन की अहम भूमिका होती है। पानी पीने के लिए प्याऊ की व्यवस्था करना, यथा सामर्थ्य अन्न दान - वस्त्र दान करना। निःशुल्क चिकित्सा प्रदान करना, निःशुल्क विद्यालयों का निर्माण करने के साथ-साथ धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन जैसे अनेकानेक सेवा कार्य धन से ही संभव हो पाते हैं।

💐 मानसी सेवा अथवा मन से सेवा- तन और धन की असमर्थता में भी हम मन से समाज की सेवा कर सकते हैं। समाज के हित का चिंतन, उचित परामर्श और सदैव समाज सेवा में निरत लोगों की प्रशंसा और उनका आत्मबल और मजबूत हो ऐसी बात करना भी आपके द्वारा की जाने वाली मानसी सेवा ही है।

💐 साथ ही साथ अगर ज्यादा कुछ न कर सको तो प्रभु के समक्ष रोज सर्व मंगल की कामना के लिए प्रार्थना करना भी आपके द्वारा समाज की मानसी सेवा ही है।

💐 तन से, धन से अथवा तो मन से, प्रभु ने जिस भी लायक आपको बनाया है, उसी अनुसार समाज सेवा करने का सौभाग्य अवश्य प्राप्त करना चाहिए।